श्री उदासीनाचार्य जगद्गुरु

श्रीचंद्र बाबा

के

भजन, आरती और स्तुतियाँ

: कर्ता :

राजा जयकिशनदास गुलाबदास भगत

ई. स. १९७१] मूल्य – अमूल्य [संवत २०२७

पंखीडानो मेळो

कोई आज जशे कोई काल, आ तो पंखीडानो मेळो,
माटे भजी लो दीनदयाळ, आ तो पंखीडानो मेळो,
आ तो पंखीडानो मेळो, आ तो पंखीडानो मेळो—टेक
सौए ऋणानुबंधे मळियां, कोई जन्मनां सुकृत फळियां;
जेवां आव्यां तेवां जाय, आ तो पंखीडानो मेळो—कोई०
मायानो खेल आ खोटो, काया पाणीनो परपोटो;
क्यारे फूटे ! ए कही न शकाय, आ तो पंखीडानो मेळो—कोई०
साथे कोई न आव्युं के आवे, सौए सौना रस्ते जावे;
जेम वादळियां विखराय, आ तो पंखीडानो मेळो—कोई०
मलियो मानव जन्म अमोलो, आवी हरिभजनमां डोळो;
शंकर अमृत वाणी गाय, आ तो पंखीडानो मेळो—कोई०

卐

पंथीडाने

ओ डाकोरवाळा दोहलिया (ए राग)

ओ प्रेमनगरना पंथीडा !
कई प्रेमनी वातो कहेतो जा,
कई दिलनी वातो कहेतो जा—टेक०

प्रेम पंथ पावकनी ज्वाळा, प्रेमी जपे छे प्रियतमनी माळा;
वहाला विना घडीए ना गमे, ए हृदय कहानी सुनतो जा—कंई०
प्रेम मळे छे प्रेमीना द्वारे, झेर मर्युं छे आ संसारे;
प्यार न जोयो कंई जगमां, ए वात हृदयमां मुकतो जा—कंई०
अंतर ज्योति बाहेर ज्योति, ज्योतिनी मांही जोयुं में मोती;
मोती लीधुं [illegible]मय द्वारा, ए मोती तूं चूगतो जा—कंई०
शंकर प्रेम नशामां डोले, घट घट हंस सोहं बोले;
खोले भीतरना पडदाओ, ए ज्ञान महीं तु डूबतो जा—कंई०

जगद्गुरु श्री १००८
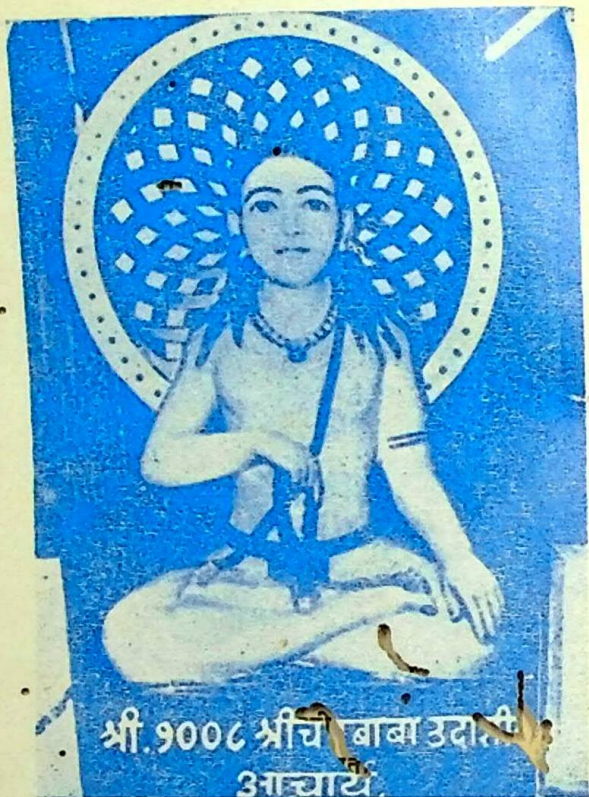
श्री परम पूज्य श्री उदासीन आचार्य

श्री श्रीचंद्रबाबा

श्री १०८ श्री तपस्वीजी
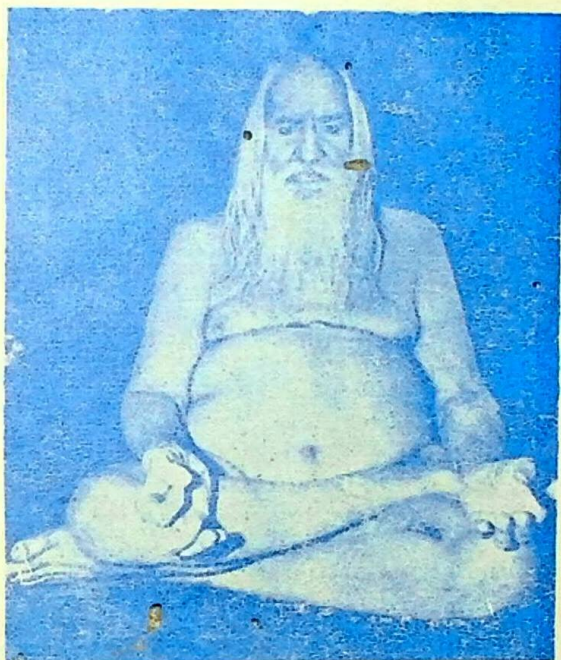
श्री परम पूज्य सद्गुरु

श्री पूरणदासजी महाराज

श्री उदासीनाचार्य जगद्गुरु

श्रीचंद्र बाबा

के
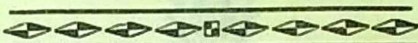
भजन, आरती और स्तुतियाँ

: कर्ता :

राणा जयकिशनदास गुलाबदास भगत

ई. स. १९७१] 卐 [संवत २०२७

श्रीचन्द्र बाबाके भजन, आरती और स्तुतियाँ

(१) भक्ति तणा ज्यां पुर उलटे—(ए राग)

श्रीचन्द स्वामी सद्गुरुको, वारंवार प्रणाम हो ।
नानक सुत श्रीचन्द बाबाको, वारंवार प्रणाम हो ॥ टेक ॥
धर्मके लिये कलिकालमें, सदाशिव प्रगट हुवे ।
नानकके घर जन्म लेकर, श्रीचन्द धराया नाम हो ॥ (१)
उदासीन आचार्य बनके, धर्मका उपदेश किया ।
जगद्गुरु कहेलाते जगमें, वो ही धरमके धाम हो ॥ (२)
सदा योगका साधन करके, योग-बल हाजर किया ।
जगमें बालयति कहेलाये, योगीमें सरनाम हो ॥ (३)
ऐसे योगीके चरणमें, सदा सीर झुका दिया ।
वो ही तपस्वी, पुरण प्रभुजी, बन बैठे आराम हो ॥ (४)
कहत 'जयकिशन' सदा, ग्रहिलो चरण गुरुदेवका ।
भवबंधन छुट जाये तेरा, जगमें अमर नाम हो ॥ (५)

卐

(२) हो प्रभु सुनजो विनती हमारी—(ए राग)

जय श्री चन्द बाबा त्रिपुरारी, हां [illegible] हम आया शरण [illegible]म्हारी रे ।
हां रे करूँ वन्दन बारम्बारी रे, जय श्री...टेक
हां रे बाबा प्रथम ही करत प्रणामूं, हां रे तम चरणोंमें शीश नामूं ।
हां रे करूँ बिनती बारम्बारी रे, जय श्री...(१)
हां [illegible] जय जय विश्वम्भर नाथे, हांरे बाबा कहूं मैं जोडके [illegible] ।
हां रे [illegible] दो चरणोंकी भक्ति तुम्हारी रे, जय श्री...(२)
हां रे जय [illegible] हर हर विश्वम्भर, हां रे करुणासागर करुणा कर ।
हां रे आप भक्तनके हितकारी रे, जय श्री...(३)

हां रे बाबा धर्मचन्द उपदेशियो, हां रे भक्तगिरिको शरणे रखियो ।
हां रे बना दिये उदासी आचारी रे, जय श्री...(४)
हां रे राणा प्रतापको धन दिलाये, हां रे रामदासको समर्थ बनाये ।
हां रे रिद्धि सिद्धिके दाता भारी रे, जय श्री...(५)
हां रे कमलासनको शिष्य कीना, हां रे अलमस्त नाम रख दीना ।
हां रे बाबा किरपा की अति भारी रे, जय श्री...(६)
हां रे बालकृष्णको सजीवन किया, हां रे बालहास नाम रख दिया ।
हां रे शिष्य करके लियो भव तारी रे, जय श्री...(७)
हां रे गोविंद देव और पुण्यदेव, हां रे दोऊ शरण लिया तत खेव ।
हां रे उदासीन धर्म हितकारी रे, जय श्री...(८)
हां रे ऐसे अनेक भक्तको तारे, हां रे आर्य धर्म रक्षा की भारे ।
हां रे अब स्वीकारो बिनती हमारी रे, जय श्री...(९)
हां रे बाबा आपकी है दिव्य शक्ति, हां रे मुझे देदो चरणकी भक्ति ।
हां रे जयकिशन कहेते बारम्बारी रे, जय श्री...(१०)

卐

(३) ओ डाकोरवाला डोहलिया—(ए राग)

जय जगद्गुरु श्रीचन्दबाबा, आप शँकरके अवतारी हो ।
प्रभु तुम हो सन्तनके साहिबा, और भक्तनके हितकारी हो ।। टेक ।।
कलियुगमें सब ये नर-नारी, बने थे धर्म भ्रष्टाचारी ।
तब प्रगटे आप ही त्रिपुरारी, श्री चन्दबाबा नाम धारी हो ।। (१)
मायातीत [illegible] निष्कामी, परमात्मा पुरुषोत्तम स्वामी ।
आप हो सबके अन्तरयामी, निरंजन निराकारी हो ।। (२)
धर्म स्थापनके लिये अविनासी, बचपनसे बने आप वनवासी ।
कहलाये अवधुत उदासी, और बालयति ब्रह्मचारी हो ।। (३)
बैठ समाधीमें सोहे पद्मासन, योगबळ हाजर किया करी साधन ।
लुप्त भस वै धर्म सनातन, बाबा उनके बने आचारी [illegible] (४)
पाखण्डी मत थे भिन्न भिन्नके, इन सबको उखाड़ दिये छिन्नके ।
बने आदि आचार्य उदासीनके, बाबा धर्म धुरंधर धारी हो ।। (५)

वेदीवंशको रखनेके लिए, बीस गांव भुजाको लम्बी किये ।
धर्मचन्दको हयसे उतार दिये, लियो वेदीवंश बधारी हो ॥ (६)

भक्तगिरि चरणोमें आया, अपना करके शिष्य बनाया ।
उसका लक्षचौर्यासी मिटाया, कीरपा कीनी अति भारी हो ॥ (७)

सब भक्तन शरणोंमें आते, गुणीजन तेरा गुणला गाते ।
वो सब मन वांछित फल पाते, बाबा आपकी ये बलिहारी हो ॥ (८)

बाबा जमात आपकी बढ़ती रहे, ये धुनीकी ज्योत सदा जलती रहे ।
सदा भस्म ये हमको मिलति रहे, हम पतितको पावनकारी हो ॥ (९)

जय जय धुनी साहब चन्द्रयति, आप योगीके है योगपति ।
'जयकिशन' की है अल्प मति, क्या गावे महिमा तुम्हारी हो ॥ (१०)

卐

(४) तेरा गुणला वखाणुं वारी वारी—(ए राग)

तेरा गुण मैं वखाणुं वारी वारी रे, श्री चन्द बाबा शंकरके अवतारी रे ।
करूं वन्दन मैं वारंवारी रे, श्री चन्द बाबा शंकरके अवतारी रे ॥ टेक ॥

उदासी धर्मसे भ्रष्ट हुवे अब, कळियुगके नरनारी रे ।
ऐसा अन्धेरा देख सदाशिव, प्रगटे चन्द्र नाम धारी रे ॥ (१)

पंदरसे एकावन भाद्रपद मासे, शुक्ला नवमी गुरुवारी रे ।
सुलक्षणी माताकी कुक्षे अवतरे हो, तवलंडी गांव मोजारी रे ॥ (२)

मुद्रा भस्म जटा दीसे भुषीत, प्रगट भये त्रीपुरारी रे ।
धर्म काज प्रगटे इस जगमें, लिला किये बड़ी भारी रे ॥ (३)

मुठ्ठीभर चणेकी मोती बनाके, दिये याचकको पळवारी रे ।
जाके जंगलमें सिंहकी गुफामें, चकित किये नर नारी रे ॥ (४)

गुरु अविनाशी मुनिके बचनका, बोझ लिया शीर भारी रे ।
आदि आचार्य बने उदासीनके, धर्म-धुरन्धर धारी रे ॥ (५)

भ्रमण किये प्रभु सारे भारतमें, उदासी धर्म हितकारी रे ।
गीता सुनाके प्रीत बढ़ाई धनाको मिलाये कृष्ण मोरारी रे ॥ (६)

धर्मचंदको अश्व परसे उतार्यो, लियो वेदी वंश बधारी रे ।
भक्त गिरिको देवी हींगळाजके, दरशन दिखलाये दया धारी रे ॥ (७)

एक सोदागरका सिन्धुमें डूबता, जहाज लिया तुने तारी रे ।
वजीरखांको रामभक्त बनाये, गर्व यवनका उतारी रे ॥ (८)
भस्म–तिलकसे राम रतनको, मौतसे लिया उगारी रे ।
मरे हुए मृगको किये सजीवन, ऐसी अमिद्रष्ठि धारी रे ॥ (९)
आप वचनसे भामाशाहने धन, दिये प्रतापको भारी रे ।
राणा प्रताप यवनोंसे लडके, धर्म रक्षा कीनी सारी रे ॥ (१०)
रामदासको महा समर्थ बनाये, ऐसे संतन सुखकारी रे ।
सारे भारतके नरनारीको, बनाये उदासी आचारी रे ॥ (११)
सुनाये शिष्यको अन्तिम सन्देशा, धर्मप्रचार रखे जारी रे ।
अलमस्त, बालहास, गोविन्द, पुष्पदेव, मण्डलपति किये चारी रे ॥ (१२)
स्थापित किये फिर धर्म उदासी, लोगोंके कल्याणकारी रे ।
रावी नदीमें शीलापे बैठके, उतर गये उस पारी रे ॥ (१३)
चम्बेमें पर्वतकी गुफामें, अद्रश्य हुए श्रीपुरारी रे ।
आप जैसे ना हुए नव होगा, अवधुत पर उपकारी रे ॥ (१४)
ऋषि मुनि भी पार ना पावे, तुमरी लीला ऐसी न्यारी रे ।
दास 'जयकिसन' अल्प मतिसे, गावे क्या लीला तुमारी रे ॥ (१५)

卐

(५) सरोदरकांठे सबरी बेठी (ए राग)

जय जय श्रीचद स्वामी भक्तकी, भांगी भीड तमाम,
नानक सुत श्रीचंद बाबाको वारंवार प्रणाम—टेक
धर्मके रक्षण करनेको, संतोके संकट हरनेको
नरतन रुप ले आये सदाशीव, श्रीचंद धरके नाम—नानक (१)
आप हो सबके अंतरयामी, परमात्मा पुरसोतम स्वामी,
बाल यति कहेलाये बाबा, योगीमें शर नाम—नानक. (२)
गुरु कीये हे मुनि अविनाशी, बने आप अवधूत उदासी,
जगद्गुरु कहेलाये जगमें, जेसे धर्मके धाम—नानक. (३)
धनाको कृष्ण मीला दीया हे, धर्मचंदको बोध दीया हे,
भक्त गिरिको शरण लीया हे, नगर ठठ्ठेके ठाम—नानक. (४)

सोदागरका जहांज तराये, वजीरखांको रामभक्त बनाये,
मोतसे बचाये रामरत्नको, एसे कीये निष्काम—नानक (५)
मरे हुवे मृगको जिंदा बनाये, राणा प्रतापको धन दीलाये,
रामदासको समर्थ बनाये, धर्म रक्षाके काम—नानक. (६)
एसे अनेक भक्तको तारे, संतोके संकट निवारे,
उदासी धर्मका डका बजाया, भारत भरमें तमाम—नानक. (७)
आर्य धर्म रक्षाकी भारे, फीर मंडक पति कीया हे चारे
अलमस्त, बालहास ओर गोविंद, पुष्पदेव हे नाम—नानक. (८)
रावी नदीमें शीला तराई, बेठके गये उस पार चलाई
चंबेमें पर्वतकी गुफामें, हुवे अद्रश्य आराम—नानक. (९)
दीव्यशक्ति बाबा आप धरावे, ऋषि मुनि भी पार न पावे,
तो फीर क्या गावे जयकीशन कहे चरण शीर नाम (१०)

卐

(६) प्रभु चढचा कदमनी डाळ (ए राह)

प्रथम सुमरण करू तेरा नाम, जय श्रीचंद बाबा,
तेरा नामसे होवे आराम, जय श्रीचंद बाबा—टेक
तुम शंकररुप अवतारी हो, सब भक्तनके हीतकारी हो,
बार बार ही करू मैं प्रणाम,—जय श्री. (१)
धर्मरक्षाके लिए तुम अवतरे हो, तेरा नाम जपके कई नर तरे हो,
बहोत भक्तोंके किये है काम,—जय श्री. (२)
तपसी पुरण बाबा जपे नाम तेरा, उनका मिटा दीयां तुने अंधेरा,
तोडे मायाके बंधन तमाम,—जय श्री. (३)
बहोत मनहर दीसे मूर्ति तोरी, दूर होती दर्शनमें बिपत मोरी,
तु ही राम और तुंही मेरे श्याम—जय श्री. (४)
कर्ण मुद्रे और कराडंबा साजे, गौर वर्ण शीर बाबरीया छाजे,
भस्म दीसे हो दोर दमाम—जय श्री. (५)
कटी कोपीन गलशेली सोहे, देखके जयकीशनका मन मोहे,
तेरा ध्यान धरते आठोजाम—जय श्री. (६)

(७) सारी सारी राते तेरी—(ए राह)

जयजय चंद्र यति श्रीपुरारी देना दर्शन बाबा दया दील धारी रे (२) जय
अज्ञानी बाल बाबा कहेता कर जोडके, दर्शनके लिये आया हुं दौडके,
आया हुं दौडके मैं शरण तुंमारी रे (२) जय—(१)
तेरे ही भक्तो बाबा लाख करोड है, मेरे ही एक बाबा तुमही अजोड है,
तुम ही अजोड बाबा श्रीचंद [illegible]धारी रे (२) जय—(२)
कोई कहेते शंकर रूप अवतारी, कोई कहेते बाल यति ब्रह्मचारी,
यति ब्रह्मचारी, पुरो मुराद मारी रे (२) जय—(३)
तुमरे बियोगे बाबा होते बळापो, कीरपा करके दर्शन आंपो,
दर्शन आपो बाबा बिनती स्वीकारी रे (२) जय—(४)
[illegible] तडपावो बाबा देना ही दर्शन, बिनती करत है दास जयकीशन
दास जयकीशन कहेते सुणो दाद मारी रे (२) जय—(५)

卐

(८) प्रथम सुमरण करु—(ए राग)

मेरे दीनबंधु दीनानाथ, जय पुरण बाबा
मेरी जीवनदोरी तेरे हाथ, जय पुरण बाबा—टेक
तेरा दर्शन करनेको आया मैं, भेट धरने कछुं ना लाया मैं
एसो दीन मैं तुही दीनानाथ—जय (१)
पुरण बाबा तुम बहोत शक्तिधर, तुम बिन मेरी कोई ना लेवे खबर
तेरी हींमतसे भीडुं मैं बाथ—जय. (२)
मात तात सुत नार मित्रो मेरा, सगा संबंधी बने सब लुटेरा
मोंहे सच्चा तेरा संगाथ—जय. (३)
एसा पहेचानके आया शरणमें, कहेते जयकीशन रखो मोहे चरणोमें
मेरे शीरपे रखो तुम हाथ—जय. (४)

卐

(९) विलंब करशो नहि मारा बालमा रे (ए राह)

आनंद आनंद बाबा तेरे धाममें है,
सबके हीरदेमें हर्ष अपार. आनंद टेक.

तुमरे चरणोंमें सब देवता बसे हो,
पुंजता पाप न रहते लगार. आनंद (१)

दुःखी लोग आता है दर्शनके लिये हो,
उनका दुःख ना रहेते तलभार. आनंद. (२)

कोइभी भूखा न रहेवे तेरे स्थानमें हो,
एसी बडी है तुमरी कोठार. आनंद. (३)

उंचके नीचका भेद कोइ ना रखे हो,
एसो पावन तेरी दरबार. आनंद (४)

छोटे ओर बडेकी तमा तुम ना रखे हो,
सबपे समान तेरो वहेवार. आनंद. (५)

जयकीशन तेरे चरणमें गीरा हो,
गाते हो गुण तेरा आधार. आनंद. (६)

卐

(१०) भगवान करे ते भला माटे (ए राह)

बाबा तेराही गुणमें गाता हुं गाते गींते आनंद मनाता हुं. टेक.
तेरे ही रुपके वर्णन करके । दुसरे को भी गवाता हुं ॥ (१)
आप कहते माहे बदनाम करते । देखा एसामें सुनाता हुं ॥ (२)
सच्ची बात बाबा कहेत हुं तुमको । जुठ बोलता अकडाता हुं ॥ (३)
जेसी तुमे मोहे मती दीनी हे । एसी कविता बनाता हुं ॥ (४)
तुमरे सहारे जीता हुं जगमें । तुमी जो देता वो खाता हुं ॥ (५)
जयकीशन कहे तुम कीरपासे । जीवन नैया चलाता हुं ॥ (६)

卐

(११) थोडा थोडा थाव वरणागी (ए राह)

मूर्ति हे कामणगाली हे बाबा तेरी, मूर्ति हे कामणगाली ।
मोहे लगती बहोत रुपाली हे, बाबा तेरी, मूर्ति हे कामणगाली ।। टेक.
जादुं भरी नेणा ओर शीरपे बाबरीया, मुखपे चमके लाली ।। हे बाबा (१)
भस्म सोहे बाबा तुमारे तनपे, पहेनी हे कफनी काली ।। हे बाबा (२)
बालीपे अहोनीश तपस्या करते दीसे बहोत शक्तिशाळी ।। हे बाबा (३)
जयकीशन गुण गाते बाबा तेरा हीरदे आनंद उछाली ।। हे बाबा (४)

卐

(१२) ओ मुसाफीर रे (ए राह)

मेरे बाबाजी सुनलो कहेता हुं साचुं-तेरा गुण गाके मेंतो नाचुं ।
मेरे बाबाजी जुठ लगे तो तोडो डाचुं-तेरा गुण गाके मेंतो नाचुं ।। टेक
बाबा तुमी हो मेरे सद्‌गुरु देवा सदाय मांगु तेरे चरणोकी सेवा ।
मेरे बाबाजी ओर सकल काम काचुं ।। तेरा० (१)
बाबाजी तुम पहेनते कफनी काली भक्तोने ये नामकी दी तुमने बहाली ।
मेरे बाबाजी येही नामसे मे भी जाचुं ।। तेरा० (२)
काली कफनी वाले नाम तुमारा सकल भक्तोको लगता हे प्यारा ।
मेरे बाबाजी दर्शन करके में राचुं ।। तेरा० (३)
तुमी कहते हे मोहे बदनाम करते नजरोसे देखावो मुखसे ओचरते ।
मेरे बाबाजी तकसीर हो तो क्षमा याचुं ।। तेरा० (४)
तेरे चरणमें मन मेरे जोडे जयकीशन तेरा नाम ना छोडे ।
मेरे बाबाजी चाहे-वेदो पुराण वांचुं । तेरा० (५)

卐

(१३) तारी लगन मने लागी (ए राग)

आपंको रुचे रंग काला । हे काली कफनी वाला ।।
मोहे भजन तेरा वहाला । हे काली कफनी वाला ।। टेक०
तेरीही भक्ति भाये मुजको । पिलादो भक्तिका प्याला ।। हे० (१)
तेरे ही प्रेममें पागल बनुंमे । एसा बनालो मतवाला ।। हे० (२)

तुमरी ज्योतिमें ज्योति मीलाकर। दीखादो दर्श निराळा ॥ हे० (३)
दर्शन करके पुनित बनुं में। हो जाये अंतर उजाळा ॥ हे० (४)
जयकीशन बाबा बिनति करत हे। हे दीनानाथ दयाला ॥ हे० (५)

卐

(१४) प्रभु आप हो परी पुरण स्वामी (ए राग)

तुम मेरे भये मैं तुमारा भया, मेरे काली कफनीवाले स्वामी
दर्शन करके में पुनित हो गया, मेरे काली कफनीवाले स्वामी—टेक
तेरे चरणो बीचमें गीर गया, तुम स्वामी ओर में सेवक भया
आपणमें फरक इतना रह गया—मेरे (१)
बाबा तुमी तो हो अंतरयामी, पामर में तो बाहेरगामी
इतनी मुजमें रही है खामी—मेरे (२)
तुम सींधु और मैं परपोटा, ऐसे आप बडे में बहुत छोटा
इस लीये नाता अपना नहि खोटा—मेरे (३)
तुम सृष्टिके सर्जन करता में अंश तुमारा ध्यान धरता
तुम देते मति एसे विचरता—मेरे (४)
बाबा :तुमी तो परमात्मा कहाये, में तुमरेमेंसे बहार आये
आखीरमें तेरेमें समाये—मेरे (५)
मुजमें दुर्गुण बहोत भरीयो, करुणा सागर कीरपा करीयो
जयकीशन तेरे चरण ठरीयो—मेरे (६)

卐

(१५) मने लाग्यो तारो नाद (ए राग)

हे चाहे करना मोहे वदनाम तो भी बाबाजी तेरा नाम,
ये नाम तेरा ना छोडुं में
बाबा तुझ कीरपासे आज में आके खड़ा तेरे द्वारे
बाबा तेरा पुजन करके जपु में सतकरतारे—ये (१)
काली कफनीवाला आपको रुचता हे रंग श्यामे
श्याम रंग आपको रुचता है, मोहे रुचीर तेरा नामे—(२)

तेरेही नाममें चकचुर होकर, नामकी धुन मचावु
डंका बजे सब जगे तेरे नामका में केसे भुल जावु—(३)
संतोके भी तुम संत हो बाबा भक्तोके रखवाला
जयकीशनके स्वामी तुम हो, काली कफनीवाला—(४)

卐

(१६) (राह उपरका)

मेरे सद्गुरु तारणहार, मेरे निराधारके आधार, पुरण बाबा तुमी हो-टेक
निर्धन ओर निराधार बालक आयो तुमारे द्वारे
करजोडके बाबा विनती करत हुं रखलो चरण मोजारे—पुरण (१)
संसारमें कोई सुखी ना दीसे सबही दुःखीया दीखाये
सबही सबके दुःखमें पड़े हो मेरा कोण मिटाये—पुरण (२)
फीर फीरके बहोत थका में बालक दासके दास तुमारो
आखीर आया बाबा तेरे नीकटमें, चाहे मारो के तारो—पुरण (३)
दीनबंधु दीनानाथ दयाला दोष हमेरा बिसारो
जयकीशनकी अरज सुनके, आया विघन विदारो—पुरण (४)

卐

(१७) भगवान करे ते भला माटे (ए राग)

अब दर्शन दो बाबा चन्द्रयति, बाबा चन्द्रयति मेरे प्राणपति ॥ टेक ॥
दर्शन बिन मोहे कल ना पड़त है, जल बिन मीन जैसे टमटमति । (१)
कर्णमुद्रा करतुंबा साजे, गलशेली बहोत सोहे अति ॥ (२)
गोरवर्ण शीर बाबरीया छाजे, कटि कोपीन तनु भस्म अति । (३)
अचल समाधि सोहे पद्मासन, सनमुख सतत धुनी जलती ॥ (४)
ऐसा दर्शन दो बाबा मुझको, 'जयकीशन' करते बिनतीं ॥ (५)

卐

(१८) जरा सामने तो आओ छलिए (ए राग)

मेरे सद्गुरु देव सुनो बिनती, तुम बिन कोन सुने ये पोकार हो ।
मेरी नैया चली है मझधारमें, उसे तुम ही बचावन हार हो—टेक

कुटुम्ब कबीला दोस्त बिरादर, मतलबकी करते यारी ।
आप है बिन मतलबके साथी, तपसी पूरण ब्रह्मचारी ।।
बाबा तुम ही मेरे दिलदार हो, तेरी बिनती करुं बार बार हो–मेरी-१

माया जल है भव सिंधुमें, काल वायु चहूँ ओर वही ।
सिंधू बीच मेरी जीवन नैया, डगमग डगमग डोल रही ।।
और अज्ञानका अंधकार हो, राह मिलता न जाऊँ केसे पार हो–मेरी-२

काम क्रोध और लोभ तरंग ये, हरदम पे तकडाता है ।
और भी विषय महान मगर ये, नाव डूबाने चाहता है ।।
बाबा तुम एक तारणहार हो, तुम बिन है ना किसीका आधार हो–मेरी-३

तुम बिन मेरा कोई ना सहारा, सद्‌गुरु दीन दयाल मेरा ।
तार दो मेरी जीवन नैया, कहे जयकिशन बाल तेरा ।।
मुझे एक ही तेरा आधार हो, बाबा कर दो मेरा वेडा पार हो–मेरी-४

卐

(१९) गाये जा गीत मिलनके—(ए राग)

मनहर मूर्ति तुम्हारी हीरदेमे धारी, हो काली कफनीवाला ।
बर्णु मैं शोभा तुम्हारी करना मदद मारी, हो काली कफनीवाला ।। टेक ।।

शिर जटामें गुलाल मुगट, सोहे लालम लाल ।
तनपे भस्म और काली कफनी, दीसे झःकझमाल ।।
नेणा है कामणगारी नजर ठरी मारी, हो काली कफनीवाला—(१)

गौब्राह्मण प्रतिपालक हो बाबा, सद्‌गुरु दीनदयाल ।
बालीपे सदा बिराजते हो, भक्तनके रखवाल ।।
मुसकाती बाणी तुम्हारी लगे बहुत प्यारी, हो काली कफनीवाला—(२)

सतकी शमशेर लेकर बाबा, फिरे जग भीतरमें ।
उदासी धर्मका कियां पसारा, यह भारतभरमें ।।
ऐसे तपसी बलधारी पूरण ब्रह्मचारी, हो काली कफनीवाला—(३)

भूषण आपका सोहे अतिशय, लीला है अपरंपार ।
अज्ञात है जयकिशन बालक, वर्णें क्या विस्तार ।।
आया मैं निकट तिहारी दर्शनका भिखारी–हो काली कफनीवाला—(४)

卐

(२०) मा अंबिका शरण तुमारे मने राखजो–(ए राग)

हो गुरुदेव रखना मोहे शरणमें, मैं आया तिहारे धाम रे—टेंक
दीनबंधु दीनानाथ तू मेरे, भक्तनका तुम संकट कटे रे ।
किरपा करना तेरा काम रे, हो० (१)
सकल तीरथ गुरु तुमरे चरणमे, ऐसा समज कर आया शरणमें ।
चरणोंमें देदो मुझे ठाम रे, हो० (२)
विष्णु विरची और महादेवा, रेन दिन तेरी करत है सेवा ।
कभी न रहेता बेफाम रे, हो० (३)
सर्वज्ञ हो आप सद्‌गुरु देवा, जयकिसनको दे दो सेवा ।
दीन दयालु तेरा नाम रे, हो० (४)

卐

(२१) रणछोड डाकोरवाला–(ए राग)

हे काली कफनीवाला, मेरे सद्‌गुरु देवा ।
बाबा मुझे देदो आपके, चरणोंकी सेवा—टेक
अज्ञानी मैं बाल प्रभु, आया है द्वारे । (२)
करना नजर मतवाला, आयो हूं शरण रहेवा ।। बाबा० १
चरणोंमें रह कर सदा, पूजन करुं तेरा ।
करके पूजन मेरे वहाला, लहावो अमूल लेवा ।। बाबा० २
आप बिना मेरा प्रभु, ना कोई सहारा । (२)
है भक्तोंका रखवाला, दो सेवाका मेवा ।। बाबा० ३
बार बार बिनती करते, जयकिशन दासे । (२)
हे सद्‌गुरु दीन दयाला, करुणा करो देवा ।। बाबा० ४

卐

(२२) तारे आधारे अमे जीविए रे—(ए राग)

गुरुपूनम दिन आजका रे, बाबा धन्य हमारे जीवन रे। सद्गुरु देवा १
आज आनंद मेरे अंगमें रे, बाबा हुआ तुम्हारा दर्शन रे ॥ सद्० २
दर्शन करके हमे पूजन किया रे, बाबा आज हुवा है पावन रे। सद्० ३
गुण गाता हम आपका रे, बाबा जोडे तुम्हारेमें मन रे। सद्० ४
जयकिशनको तेरा आशरा रे, बाबा मिटा दो आवागमन रे ॥ सद्० ५

卐

(२३) मेरे श्यामसुन्दर मोरार—(ए राग)

मेरे सद्गुरु जुगदाधार, काली कफकी वालिया।
मैं आके खड़ा तुम द्वार, काली कफनी वालिया ॥टेक॥

आप चरणमें कहूँ शिर नामी, कहूँ शिर नामी है मेरे स्वामी।
रखो चरण मोझार, काली० ॥ (१)

हम बालकपे करूणा करना, करूणा करना संकट हरना।
तेरा एक आधार, काली० ॥ (२)

देखी मैं आ जगकी रीति, नां देखी तम जैसी नीति।
मेरे किरतार, काली० ॥ (३)

स्वारथकी सब सगाई करते, तेरा मेरा करके बढ़ते।
जगका ये व्यवहार, काली० ॥ (४)

सच्चा है एक नाता तेरा, तुम बिना चहूँ ओर अन्धेरा।
नैंयाके तारनार, काली० ॥ (५)

आया मैं अब तेरे शरणमें, 'जयकिशन' कहे रखो चरणमें।
कर दो बेड़ा पार, काली० ॥ (६)

卐

(२४) भोलानाथसे निराला—(ए राग)

हो मेरे सद्‌गुरु सत करतार, मुझे रखो चरण मोझार-मेरा कोई नहीं।
तेरे बिना जुगदाराधार, मेरा कोई नहीं ॥ टेक ॥

मात तात पुत भगिनी दारा, सगा सँहोदर मित्रों सारा ।
करते मतलबका व्यवहार, मेरा कोई नहीं-हो मेरे० ॥ (१)

झूठा खेल है सब मायाका, नहीं भरोसा ये कायाका ।
सच्चा आप है सरजनहार, मेरा कोई नहीं-हो मेरे० ॥ (२)

आप हो मेरे प्राणप्यारा, आप बिना मेरा न कोई सहारा ।
मुझे तेरा एक आधार, मेरा कोई नहीं-हो मेरे० ॥ (३)

'जयकिशन' कहे बालक तेरा, पूरण करदो मनोरथ मेरा ।
मोहे भवजल पार उतार, मेरा कोई नहीं-हो मेरे ॥ (४)

卐

(२५) भगवान करे ते भला माटे—(ए राग)

हरी ॐ सत्य नाम समरने दो, ॐ सत् करतार ओचरने दो ॥टेक॥
किरपा करके रोको ना मुझको, जीते जी नाम समरने दो । (१)
सत् करतार करे बेडा पारे, ध्यान ही उसका धरने दो ॥ (२)
सत्य नामकी नावमें बैठके, भवजल सागर तरने दो । (३)
कहत, 'जयकिशन' लागी लगन ये, नामको अब ना विसरने दो ॥ (४)

卐

(२६) श्रीचन्द्र स्वामी सद्‌गुरुको—(ए राग)

जय जय पुरण बाबा हमारे, काली कफनी वालिया ।
धुनीवाले साहब हमारे, काली कफनी वालिया ॥टेक॥

प्रह्लादपुर शहेर मुलतानमें, बाबा आपने जन्म लिया ।
बाबा पंजाबदासके चरणमें, शिश अपना झूका दिया ॥ (१)

धर्मके लिए उदासीनका, बाना आपने ग्रहण किया ।
बाबा पंजाबदासके वचनों, प्रभु आपने अदा किया ॥ (२)
बाली पर तप करते रहे, धुनी सदा जलती रखी ।
वोही धुनीकी भस्म जैसे, दवा आपने बना दिया ॥ (३)
भस्म कफनी सोहे तनपे, सीरपे सोहे बाबरिया ।
उदासी धर्मको आपने, सारे जगमें फैला दिया ॥ (४)
राम-कृष्ण गोविंद नामकी, याद आपने दिला दिया ।
सोहम नामका जाप जपाके, हम सबका कल्याण किया ॥ (५)
बड़े भाग्य बाबा सूरतवालेको, दया करके दर्शन दिया ।
आपकी कृपासे भजन ये, 'जयकीशन' ने बना दिया ॥ (६)

卐

(२७) श्रीचन्द्र स्वामी सद्गुरुको (ए राग)

कृष्ण कहूँ कि भोला शम्भु, काली कफनी वालिया ।
दोनोंके शणगार सजे तुम, काली कफनी वालिया ॥ टेक ॥

भोलाकी भस्म और कृष्णकी कामल, दोनों तुमने धारण किया ।
दोनोंकी तुम लीला करते...काली० (१)

जैसे जटा सोहे शंकरको, कृष्ण मोर मुगट धरे ।
आपके शीरपे गुलाब मुकुट है...काली० (२)

शंकर जैसे योगी बनके, सबसे अलग रहते सदा ।
कृष्णकी तरह फिरे बस्तीमें...काली० (३)

सबमें व्यापक सबसे न्यारे, कृष्ण और भोलाशंकर ।
उसी तरह तुम रहे खलकमें...काली० (४)

पूरण कृष्णजी पूरण सदाशिव, पूरण आपका नाम है ।
पूरण ब्रह्म भगवान प्रभु तुम...काली० (५)

पार न आवे महिमा गाता, वेदोंने येही पुकारा है ॥

जयकीशन क्या गावे महिमा...काली० (६)

卐

(२८) (राह उपरका)

पुरण ब्रह्म भगवान् हमारे, काली कफनी वालिया ।
कृष्ण और शंकरसे न्यारे, काली कफनी वालिया ॥ टेक ॥
कृष्ण बसे गोकुलमें, शंकरका काशी धाम हो ।
आप बसे भक्तोंके हिरदेमें, काली कफनी वालिया ॥ (१)
कृष्ण पहने आभूषण, शिव शंकर कौपीन बांध रहे ।
दोनोंसे न्यारी कफनी आपकी, काली कफनी वालिया ॥ (२)
कृष्णके शीरपे मोर मुगट, शंकरके शीर पे गंग है ।
आपके शीरपे गुलाब मुकुट है, काली कफनी वालिया ॥ (३)
कृष्ण व्रजमें क्रीड़ा करे, शंकर सदा एकांत रहे ।
आप रहे घटघटमें व्यापक, काली कफ़नी वालिया ॥ (४)
कृष्ण हरदम गीता पढे, शँकर पढे वेदांतको ।
आप हे वेदस्वरूप गुरुदेव, काली कफनी वालिया ॥ (५)
कृष्ण भरे भण्डार भक्तके, शँकर देते वरदानको ।
आप ही भवजल पार उतारे, काली कफनी वालिया ॥ (६)
शेषजी गावे सहस्र मुखसे, वो भी पार पाता नहीं ।
'जयकिशन' क्या गावे महिमा, काली कफनी वालियां ॥ (७)

卐

(२९) (राह ऊपरका)

गुरु आपका दर्शन करके, आनन्द आज मनाता है ।
गुरु आपके चरणे झुकता, हिरदेमें हर्ष आता है ॥ टेक ॥

२

हिलमिलके सब भक्तजन, आया है अपने द्वारपे ।
आप दयासे आज ही बाबा, प्रेमसे गुण गवाता है ।। (१)
ज्ञान समा भण्डार गुरुदेव, सन्तोंके भी सन्त हो ।
गुरु आपके चरणोंमें सब, भक्तो शीश झुकाता है ।। (२)
गुरु आपका दर्शन होते, सकल दुःख मैं भूल गया ।
आज हमारे हिरदे बाबा, आनन्द मेह बरसाता है ।। (३)
बहुत दिनोंकी थी अपेक्षा, आज हमेरी पूर्ण हुई ।
निशदिन ऐसा दरशन होवे, 'जयकिशन' ये चाहता है ।। (४)

卐

(३०) हे मेरी अंबा आरासुरवाली (ए राग)

हे मेरे सद्‌गुरु दीनदयाल, सदा लेना हमारी संभाल,
दर्शनके लिये हम दौडके आया ।

दौडके आया तोफा कुछ न लाया,
है ऐसा निर्धन हे हम सब बाल ।। सदा० (१)

प्राणा आधार प्यारा सद्‌गुरु देवा,
सद्‌गुरु देजो देदो चरणोंकी सेवा ।
है येही आशासे आया तत्काल ।। सदा० (२)

गांडा घेला हम बाल तुमारा,
बाल तुमारा कभी करना न न्यारा ।
है भोला भक्तोंके आप रखवाल ।। सदा० (३)

गुन्हा हमेरा गुरु क्षमा ही करना,
क्षमा ही करना ये अरज उरे धरना ।
है कहत दास 'जयकिशन' बाल ।। सदा० (४)

卐

(३१) (राह उपरका)

हे मेरे सद्‌गुरु सत करतार, मुझे एक है तेरा आधार।
आपके बिना मेरा ना कोई संगी, ना कोई संगी ये दुनिया दोरंगी॥
है सब स्वारथके हे नरनार...मुझे० (१)
आया मैं द्वार लेके आशा दर्शनकी, आशा दर्शनकी है मेरे मनकी।
है पुरण कर दो ये आश किरतार...मुझे० (२)
दर्शन बीना मेरी नेण है प्यासी, नेण हे प्यासी रहेती उदासी।
है दया करके दिखा दो दीदार...मुझे० (३)
बार बार कहता हूँ सुनो दाद मेरी, सुनो दाद मेरी अब लगानी न देरी।
हैं कहत 'जयकिशन' सुनलो पुकार...मुझे० (४)

卐

(३२) श्रीचंदस्वामी सद्‌गुरुको—(ए राग)

गुरु आपके दर्शन करके, आनन्द आनन्द हो गया।
आनन्द आनन्द हो गया, आनन्द आनन्द हो गया॥टेक॥
हिलमिलके सब भक्तजन, आया है अपने द्वार पे।
आपकी किरपासे हम सब, गानेमें लीन हो गया॥ (१)
आप है ज्ञाननिधि गुरुदेव, सन्तोंके भी सन्त हो।
आपके चरणोंमें कई नर, पतित पावन हो गया॥ (२)
वेद कहे गुरुके बीना, किसीका न उद्धार है।
इसलिये गुरु आपके पीछे, ये जग पागल हो गया॥ (३)
बहुत दिनोंकी थी तमन्ना, अब वो पूरण हो गई।
'जयकिशन'के हीरदेमें अब, आनन्द आनन्द हो गया॥ (४)

卐

(३३) हे नाथ मारा दुवारिका (ए राग)

हे आज सद्‌गुरु करुणा की तो, दर्शन करने आया है।
धन रे हो भाग्य हमारे॥ टेक॥

चरणे शिश झुकाया है ।
है आज दर्शन करके आपके,
धन रे हो भाग्य हमारे ॥ टेक ॥

बहुत दिनोंकी दाद थी वो, दया करके स्वीकारी आज ।
हुई थी तमन्ना दर्शनकी वो, पुरन की है आज महाराज ॥
है आज दर्शन देकर हमारे आपने दिल दोलाया है ॥ धन रे० (१)
गुरु अपना दर्शन होनेसे, हिरदे आज हरख न माय ।
आनन्द अंगे अति उमंगे, कहुं आपको शिश नमाय ॥
है आजके आनन्दमें जगके, दुःख आपने भुलाया है ॥ धन रे० (२)
आप कृपासे आज हमारा, टल गये है सब संताप ।
गुरु आपके चरणे झुकता, जल गये हैं हमारे पाप ॥
है आब बाबा हम पतितको, पलमें पावन बनाया है ॥ धन रे० (३)
दीनदयालु सद्गुरु हमको, देना संत चरणमें वास ।
संत चरणोमें शिर झुकाता, कहत आज जयकिशनदास ॥
है आज तुम्हारे चरणमें गुरु, आनंद गीत गवाया है ॥ धन रे० (४)

卐

(३४) प्यारू लागे छे मने आराशुर धाममां–(ए राग)

सच्चीदानंद स्वरूप गुरुदेवा, बोलो बोलोने एक बार ।
कब पधारोंगे द्वारपे ॥ टेक ॥

पुरण ब्रह्म प्यारा पुरण पदमात्मा,
पतितोंके पापको प्रजालनार आत्मा,
प्रेमिओंके प्राण आधार—कब० (१)

दीन दाससे दया कब दरशायेगा,
दीनोंके द्वार देव कब आप आयेगा,
दुःखियोंका दुःख हरनार—कब० (२)

मायाका मोह मेरा कब मोडायगा,
मनकी मुंझवण मेरी कब मिटायगा,
मनडाको मारण हार—कब० (३)

भोले भक्तोंके भगवान् कब आयगा,
भाविकोंकी भावना कबतक निभायगा,
भले-बुरेको भालनार—कब० (४)

जगमें 'जयकिशन' को कब जगायगा,
जग जीतनेकी कब राह बतायगा,
जगद्गुरु जुगदाधार—कब० (५)

卐

(३५) बिनवुं विधान हरण—(ए राग)

एक बार आना हमारे द्वार, बाबा पुरण प्रभुजी ।
आप बीन चेन पडे न लगार, बाबा पुरण प्रभुजी ।। टेक ।।

सुने पडे हे बाबा मँदिर मेरे,
आप बिन मुझाता है मन अपार ।। बाबा० (१)

प्रेम और प्रीतसे द्वारपे पधारना,
भोला भक्तोंके हैयाका हार ।। बाबा० (२)

दीन दयालु आप देव दयावन्त हो,
कृपा करके विनंती मेरी स्वीकार ।। बाबा० (३)

बार बार बाबा मैं क्या कहूं आपको,
द्वार मेरा पावन कर दो एक बार ।। बाबा० (४)

बिनती करत बाबा दास 'जयकिशन',
विलम्ब करना नहीं रे लगार ।। बाबा० (५)

卐

(३६) हरि तारा छे हजार नाम—(ए राग)

गुरु आपका अनेक धाम, कोनसे धामे लिखु कंकोत्री ।
बार बार बदलते मुकाम, कोनसे धामे लिखु कंकोत्री ।। टेक ।।

जेसा जेंसा रूप एसा एसा तेरे काम है ।
जेसा जेसा काम एसा एसा तेरा नाम है ।।
रूप धरके फिरे ठामोठाम ।। कोनसे० (१)

वैकुण्ठे विष्णु बसे ब्रह्मा ब्रह्म लोकमें,
कैलासे शंकर परब्रह्म चौद लोकमें ।
बसे गुरुदेव चारों धाम ।। कोनसे० (२)

कभी नासिक त्रंबकमें, कभी हैं उज्जनमें,
कभी हरद्वार कभी प्रयागके वनमें ।
चो दिशामें आपका मुकाम ।। कोनसे० (३)

कभी दिल्ली शहरमें कभी है मुलतानमें,
कभी जाके बसो बाबा उत्तर हिन्दुस्तानमें ।
कभी भावनगरमें मुकाम ।। कोनसे० (४)

कभी है सिलोनमें कभी पुना शहरमें,
कभी बसो बम्बईमे आनन्दकी लहरमें ।
कभी बोरीवल्लीमें मुकाम ।। कोनसे० (५)

कभी सुरत शहेर वराछा रोड हंसबागमें,
कभी लालदरवाजा बहार कतारगाममें ।
कभी है डुमसमें मुकाम ।। कोनसे० (६)

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु महादेव तुम,
पर ब्रह्म गुरु सकलके आतम देव तुम ।
'जयकिशन' करत है प्रणाम ।। कोनसे० (७)

卐

(३७) प्रभु आप हो परिपुरण स्वामी—(ए राग)

दर्शन करने दौड़के आया, हो बाबा तुमारे चरणोमें ।
दर्शन करके शिश झुकाया, हो बाबा तुमारे चरणोमें—टेक

मेरी नैयाके तारणहारे, नीराधारोंके तुम आधारे ।
आज आया मैं तुमरे द्वारे, हो बाबा ! (१)

आप भक्तोंका पूरणकामें, मेरे अन्तरका है आरामें ।
करूं कोटि कोटि प्रणामें, हो बाबा ! (२)

सहाय करके सदा संकट कापो, आप चरणोंकी सेवा आपो ।
जल जावे सब मेरे पापो, हो बाबा ! (३)

बाबा गुन्हा हमेरा क्षमा करना, एक बिनती मेरी उर धरना ।
हम पतितको पावन करना, हो बाबा ! (४)

आप चरणोंमें मस्तक धरके, बार बार कहूँ वंदन करके ।
आया मैं सब जग फिर फिरके, हो बाबा ! (५)

हम फिरे बहुत तिरथ धामें, तो भी कहीं मिला नहीं आरामें ।
'जयकिशन' कहे दो विश्रामें, हो बाबा ! (६)

卐

(३८) सीता-राम कहो, राधे-श्याम कहो—(ए राग)

प्रभु आप हो परीपूरण स्वामी, मेरे काली कफनीवाले स्वामी ।
प्रभु सबके तुम अन्तरयामी, मेरे काली कफनीवाले स्वामी ॥ टेक ॥

प्रभु आप हो प्रल्हादपुरवाले, शहर मुलतानके रहनेवाले ।
बाली उपर तप करनेवाले, सतस्वरूप विराजे है स्वामी ॥ (१)

गुरु नानक निरंकार रूपे, बाबा श्रीचंदजी है शिव स्वरूपे ।
गुरु आप हो परमेश्वर रूपे, मेरे काली कफनीवाले स्वामी ॥ (२)

आप योगी जती और ब्रह्मध्यानी, रिद्धीके दाता ब्रह्मज्ञानी ।
बाबा पूरण पुरुषोतम स्वामी, अति सुन्दर सत्य स्वरूप स्वामी ॥ (३)

आप लंका पधारे बड़े भाग हमारे,
श्रीरामके प्यारे, सारी संगतके प्यारे ।
अपने सेवकके काज करनेवाले मेरे काली कफनीवाले स्वामी ॥ (४)

हरी प्रेम शिखाये हरी प्रेम कराये, रातदिवस गोविंद गुंण गाये ।
राम नाम जपाये सत्य नाम जपाये,
हरी नामकी गंगा बहाये स्वामी ॥ (५)

बाबा दूध दिलावे, मेवा माल मिलावे,
कढी सबझी खिलावे और क्वाई पिलावे ।
दुःख दूर करावे चीत शांत करावे,
बाबा आप हो प्रतिपालक स्वामी ॥ (६)

सारी संगत आपका ध्यान धरे, हरीनाम सत्य नामका उच्चारण करे।
श्रीराम सुन्दर :श्यामका सुमरण करे,
मेरे काली कफनीवाले स्वामी ॥ (७)

कृपा करो स्वामी दया करो स्वामी, ईस मोह मायासे छोडावो स्वामी।
सारी संगतका उद्धार करो स्वामी,
इज संसारसे पार करो स्वामी ॥ (८)

गुरु नानकको बार बार वन्दन है,
बाबा श्रीचन्द्रको सदा नमस्कार रहे ।
घुणी साहबको सदा प्रणाम रहे,
पूर्ण पिताजी हर दीलमें अमर रहे ॥ (९)

कोलंवे वालेको आप याद रहे, बाबाके दीलमें सबका ध्यान रहे ।
बाबाजीकी जमात सदा बढ़ती रहे,
ओंम सतनामका हिरदे आप रहे ॥ (१०)

卐

(३९) अब दर्शन दो बाबा चन्द्रयति—(ए राग)

जय पुरण प्रभु सद्गुरु देवा, हम आया तुम शरणे रहेवा ॥टेक॥
कीरपा करके रख लो शरणे, करूंगा चरणोंकी सेवा । (१)
चरणे रहकर लऊंगा शिक्षामण, कायापे कष्टो सहेवा ॥ (२)
कष्टो सहेकर पावन बनूंगा, नरतनका ल्हावा लेवा । (३)
इतनी अरज स्वीकारो हमारी, 'जयकिशन' आयो कहेवा ॥ (४)

卐

(४०) हरी ॐ सत्यनाम समरने दो—(ए राग)

गुरुदेव आपकी बलिहारी, आज आनंद होते अति भारी ।।टेक।।
प्रेम प्रीतिसे पधारे द्वारपे, पावन की कुटीया मारी ।। गुरु० (१)
प्रेम तुमारा दर्शन होनेसे, नेना ठरी गई है मारी ।। गुरु० (२)
गुरु तुमारा गुण क्या गावुं, महिमा आपका हे भारी ।। गुरु० (३)
ब्रह्मादिक पण पार न पाते, तो फीर कौन गति मारी ।। गुरु० (४)
'जयकिशन' कहे दास तुमारो, आश पुरण की है मारी ।। गुरु० (५)

卐

(४१) गुरुजीनी महेरमां से आनन्दनी लहेरमां—(ए राग)

हरिरस रंगमें हरिजन संगमें, सद्‌गुरुका गुण गाता है ।
सद्‌गुरुका गुण गाता मेरे प्यारे, अन्तर ज्योत जगाता है ।।टेक।।
सकल तीरथ मेरे गुरुके चरणमें, दर्शनसे खुशीया मनाता है ।।१।।
वेदका भी वेद गुरु संतका भी संत है, समझकर धुन मचाता है ।।२।।
हरि गुरु संतको एक ही समझकर, पद पखालके पी जाता है ।।३।।
कहते 'जयकिशन' गुरुके चरणमें, सदाय शीश झुकाता है ।।४।।

卐

(४२) सद्‌गुरु शरणे रे हो जइए—(ए राग)

आज गुरुदेव मेरे आंगणे पधारे,
दर्शन देकर मेरे हिरदेको ठारे ।।टेक।।

आनंद आनंद आज हुवे मेरे अंगमें,
भेट हुई है मेरे गुरुके संगमें। आज० (१)

गुणीजनों संगमें गुरु गुण गाता,
गुण गाता है वहाला गुरुको रीझाता। आज० (२)

प्रेमसे सद्‌गुरुकी जय बोलाता,
गुरुजीके चरणोंमें शीश झुकाता। आज० (३)

कहत 'जयकिशन' आज आनंद मनाता,
हरदम गुरुजीकी धुन मचाता। आज० (४)

卐

(४३) जागजे जागजे जीवडा—(ए राग)

बाबा दर्शन बीन हम झुरतारे,
आप बीत झुरे हमारे मन । टेक ।

आठे पहोर बाबा याद आपकी रे,
कहे दो कब होगा दर्शन ॥ बाबा० (१)

बाबा माखणसे कुणां हुवे थे,
आज आप केसे बने हो कठण ॥ बाबा० (२)

बाबा पुरानी आपकी प्रीत हे रे,
यादसे दुःखी होते मेरे मन ॥ बाबा० (३)

बाबा प्रीती ये कभी ना तोडना रे,
बिनती करत है 'जयकिखन' ॥ बाबा० (४)

卐

(४४) अब दरशन दो बाबा चन्द्रयति (ए राग)

बाबा कब होगा दर्शन अपना,
दर्शन अपना रामनाम जपना—बाबा-टेक ।

सत्य बात बाबा बता दो मुझको,
प्रीतमें पदडा मत रखना—बाबा-(१)

सारी संगत वेचेन बनी है,
करने लगे मनमें कल्पना—बाबा-(२)

तुमरी हमरी प्रित पुराणी,
भुडे लोग भले माने सपना—बाबा-(३)

कहत जयकिशन आप दर्शन बीन,
लग रही है मनमें बळपना—बाबा-(४)

卐

(४५) तेरे द्वार खड़ा भगवान—(ए राग)

मारा सद्‌गुरु श्री अविनास, अरज सुनलो रे मारी ।
मने आपो चरणमां वास, हुं एटलुं मागुं तमारी पास अरज० ।।टेक।।

माता पितारे वेनी बन्धु मारा कुटुम्बकबीला सारा ।
स्वारथनी सौ सगाई करतां, सुत अने वळी दारारे ।। (२)
में जाण्युं ज्यारे खास, हुं दोडी आव्यो तमारी पास अरज० ।। (१)

जुठा जगतना जुठारे मानवी, जुठी जगतनी माया ।
अन्त रामे कोई काम न आवे, बळी जशे आ काया रे ।। (२)
मने एक तमारी आश, गुरु मने जाणी तमारो दास अरज० (२)

नथी कर्यांमें जपतप तीरथ, नथी कर्या कई दाने ।
बालक हुं अज्ञान तमारो, ना जाणुं तारुं ध्यारे रे ।। (२)
तारो राखीने विश्वास, हुं नामने समरु श्वासोश्वास अरज० ।। (३)

धन-दोलत मुक्ति ना मांगुं, मांगुं भक्ति तमारी ।
हाथ जोड़ीने विनवुं तमने, अरजी लो स्वीकारी रे ।। (२)
मने करशो नहि निराश, ओ सद्‌गुरु कहे 'जयकीशनदास' अरज० ।। (४)

卐

(४६) सुनरे सखी मोहे सजना (ए राग)

आवोरे सद्‌गुरु मारे आंगणे पधारो,
बाबा लेजो हमारी खबरीया बाबा० ।। टेक ।।

अमेरे बालक तारी मायामां डुलीया,
मायाने जोई बहु मनमांहे फुलीया ।

फुलिया अपार एवा मूरख गमार,
तारू नाम कदि ना समरीया बाबा० ।। (१)

अणमुल मानव देह धरी आव्या,
मायामां मोही बहु दिवसो विताव्या ।

भुलीया तमाम नहि लीधुं तारूं नाम,
एवा अवगुणना अमे भरीया बाबा० ॥ (२)

फरी फरीने अमे कांई न फाव्या,
अन्ते सद्‌गुरु तम पासे रे आव्या ।

चरणोंनी म्हाई, कहीये शीश रे नमाई,
हवे करजों जरां तो नजरीया बाबा० ॥ (३)

दोष हमारा जाये ना कळीया,
क्षमा रे करो तारा नाममां भळीया ।

देजो दर्शन कहे दास 'जयकीशन',
तारा नामे कंईक नर तरीया बाबा० ॥ (४)

卐

(४७) जागजे जागजे जीवडा जागजे रे (ए राग)

सद्‌गुरु देव विलंब करना नहीं रे,
अब हम जायेंगे हमारे घेर ॥ टेक ॥

पहेली और आखरी हमारी विनंती रे,
गुरुदेव सुणलो हमारी पेर ॥ विलंब० (१)

मेरे मंदिर वहेला पधारना रे,
इतनी रखना हम पर महेर ॥ विलंब० (२)

संतकी जमात साथमें लावना रे,
हरीगुण गाके उडायेंगे लहेर ॥ विलंब० (३)

गुरुदेव 'जयकीशन'की विनंती रे,
स्वीकारी आवना उमंग भेर ॥ विलंब० (४)

卐

(४८) मस्तदशा—(राग-राधेना श्यामनी)

गुरुजीनी म्हेरमां ने आनन्दनो लहेरमां, नाची रह्युं मन म्हारुं रे,
नाची रह्युं मन म्हारुं, म्हारा वहाला! नाची रह्युं मन म्हारुं रे०
देवोना देवने ए हाथमां रमाडे, मृत्यु कोण बिचारुं रे०
तेत्रीस करोड देव नाचे एना हाथमां, नाचे ब्रह्मांड आ सारुं रे०
काया ने मायाना पोळियाओ नाचे, नाचे छे नारु अने कारु रे०
शंकर गाय सदा गुण गुरुदेवना साचु छे एज भवतारु रे०

卐

(४९) आज गुरुदेव मारे मंदिरे पधारे—(ए राग)

सद्गुरु-शरणे रे हो जईए,
साधन साधीने सुखियां थईए...सद्गुरु टेक०

गुरु ने गोविंद एक हो जाणीए,
आधीन रहीने हरिरस माणीए...सद्गुरु० (१)

तन, मन, धन अर्पण हो करीए,
प्राण मागे तो प्राण पाथरीए...सद्गुरु० (२)

गुरुजीनी निंदा कदीये न करीए,
कोई करे तो काने न धरीए...सद्गुरु० (३)

कडवां वचन मीठां मानी हो लईए,
कडवुं कहे तो खिजाई न जईए...सद्गुरु० (४)

गुरुना गुण गाय शंकर भावे,
सद्गुरु तोले तो कोई न आवे...सद्गुरु० (५)

卐

(५०) साचा तारणहार

(राग—कृष्ण कनैया बंसी बजैया)

सद्गुरुदेव दयाना सागर, भवजल तारणहार छे,
भवजल तारणहार गुरुजी, साचा सर्जनहार छे.
भक्तिभाव हृदयमां स्थापी, तारे आ संसारने,
अवगुण सामु कदी न जुए, क्षमा तणा भंडार छे.
भ्रांति भेद समूला छेदी, भेदी अंतरगांठने,
पाडे दिव्य प्रकाश हृदयमां, तेजतणा अंबार छे.
सोऽहम् भाव जगावी हैये टाले मोह विकारने,
सौने सत्य स्वरूप बतावे, शंका नहीं तलभार छे.
शंकर गांडो घेलो थइने, गाये गुण गुरुदेवना,
सद्गुरुना शब्दे जे चाले, तेनो बेडो पार छे.

卐

(५१) सद्गुरुजीने

(राग—हरिरसनां ओ रंगी)

जय जय जय गुरुदेवा! हुं करुं तमारी सेवा;
करुं तमारी सेवा, गुरुजी! मांगु महापद लेवा०
सकळतीरथ छे सद्गुरु चरणे, सद्गुरु साचा देवा;
वेदो अने पुराणो सौनाय मत छे ऐवा०
हुं अने म्हारुं मेली दीधुं, मेल्या मीठा मेवा;
शरणागत थई आव्यो, हुं तम चरणोमां रहेवा०
सघळा देवतणा दरबारे, ढोल पिटावु एवा;
हुं गुरुनो गुरु म्हारा, जगने शु लेवा देवा०
शंकर वंदी वंदी विनवे, आपो कायम सेवा;
हु तो नानुं मोजुं, ने आप समुंदर जेवा०

卐

(५२) कोटि कोटि प्रणाम

(राग—शामळा शाने छेटो छेटो)

वहाला गुरुजी! देवनाय देव, कोटि कोटि प्रणाम छे.
हु तो चाहुं सदाये तम सेव, कोटि कोटि प्रणाम छे.
नैयाना तारनार हैयाना हार छो,
नोधारां जीवनना जीवन आधार छो,
वहाला! आपज एक ने अनेक, कोटि कोटि प्रणाम छे
एवी म्हारी अविचल टेक, कोटि कोटि प्रणाम छे.
अंतरना जाण प्रभु! प्राणनाय प्राण छो,
आदि ने अनादि वळी पुरुष पुराण छो.
वहाला! माया के मोह नहीं लेश, कोटि कोटि प्रणाम छे.
एवो दिव्य छे आपनो देश, कोटि कोटि प्रणाम छे.
साधुना साधु ने संतोना संत छो.
भक्तोना भक्त अने भोळा भगवंत छो.
वहाला! देह छतांय विदेह, कोटि कोटि प्रमाण छे.
आखुंय विश्व छे आपनुं गेह, कोटि कोटि प्रणाम छे.
भक्ति ने मुर्क्तिनां देनारा आप छो,
शंकरनुं मन हरी लेनारा आप छो.
वहाला! म्हारे तो आपज एक, कोटि कोटि प्रणाम छे.
म्हारा जेवा तो आपने अनेक, कोटि कोटि प्रणाम छे.

卐

(५३) अमारी संभाळ

(राग—आखी दुनियानो ठाकोर)

वहाला सद्गुरु दीनदयाळ! अमारी सदाय ल्यो संभाळ,
अमे तो आपनां नानां बाळ, अमारी सदाय ल्यो संभाळ

अमारी सदाय ल्यो संभाळ—अमारी सदाय ल्यो संभाळ
गांडां घेलां तोये तमारां, अमने कदी न करशो न्यारां;
आपण छो साजा रखवाळ, अमारी सदाय ल्यो संभाळ० (२)

अमारा उपर राजी रहेजो, अमने सदा निभावी लेजो;
आपनुं हैयुं खूब विशाळ, अमारी सदाय ल्यो संभाळ० (२)

आ तो दुनिया छे दोरंगी, कोई कोईनु नहीं संगी;
स्वप्ना जेवी छे जंजाळ, अमारी सदाय ल्यो संभाळ० (२)

आपनी मूर्ति हैये धारी, शंकर गाये वाणी सारी;
पासें कदी न आवे काळ, अमारी सदाय ल्यो संभाळ (२)

卐

(५४) बलिहारी (राग—भगवान करे ते भला माटे)

गुरुदेव तणी बलीहारी छे, मंगळ मूरति बहु प्यारी छे.
अधम ओधारण पतीत पावन, सौवी लीला न्यारी छे.
देही छतां ये विदेही जेवा, निर्मल निर्विकारी छे.
ज्योत जगावी तिमिर भगावे, व्योमतणा विहारी छे.
शंकर कहे सद्गुरुनी सेवा, आनंद मंगलकारी छे.

卐

(५५) महिमा (राग—भगवान करे ते भला माटे)

गुरुदेव तणो महिमा गावो, गाई गुरुजीना थई जावो.
ब्रह्मादिक पण महिमा गावे, गावे खुद नानो बावो.
शारद शेव सदाये गावे, गावे मथुरानो मावो.
वेद पुराणो सोए गावे, पानिये पानिये पुरावो.
शंकर हरखी हरखी गावे, छोंडी देहतणो दावो.

卐

(५६) वहाली लागी छे मने गुरुजीनी गोठडी—(ए राग)

वहाली लागी छे मने, जोगी तारी झुंपड़ी,
झुंपड़ीए मोह्यां मारां मन रे, जादुभरीशी तारी झुंपड़ी–टेक.

सात आकाश सात पाताळना ओरडा,
तोरणीए टांक्यां त्रिलोक रे, जादु० (१)
ओरडेने ओरडे बळे अखंड दीवडा,
चंद्र ने सूर्य फूले फोक रे, जादु० (२)
तेत्रीस कोटी देव भरे तारी चोकीओ,
आंगणीए झुले नंदलाल रे. जादु० (३)
चोसठ जोगणी मळीने तारा चोकमां,
गरबा गुमावे धरी वहाल रे. जादु० (४)
आनन्द आनन्द थाय आखा ब्रह्मांडमां,
जय जय जयकार वरताय रे. जादु० (५)
शंकर अभेद भाव पामी तारा रूपथी,
झुंपडीनुं गीत रूडु गाय रे. जादु० (६)

卐

(५७) मारी होडी हडे हंकार रे—(ए राग)

मारा हैया केरा द्वार रे ओ जोगीडा ।
मारी नैयाना तारनार रे ओ जोगीड़ा—टेक.

दर्शन करवा दोड़ी आव्यो, छोडी दीधो संसार रे. ओ जोगीडा–१
बहु जन्मना वहाणा वाया, खोल भीतरना द्वार रे. ओ जोगीडा–२
मळीए आपण आज उमंगे, करीए जय जयकार रे. ओ जोगीडा–३
शंकर तारो दोस्त पुराणो, खेले खांडा धार रे. ओ जोगीडा–४

卐

(५८) स्वरूपानन्द (राग-राधेना श्यामनी)

गुरुजीना नाममां ने वहालाना धाममां, साचो आनन्द में जोयो रे.
साचो आनन्द में जोयो म्हारा वहाला ! जूठो आनन्द में खोयो रे.
तत्त्वनुं तत्त्व ते हाथमां ज आव्युं; त्यारे संसारने वगोयो रे.
आभलाथी ऊँचुं ने पृथ्वीथी पहोळुं; तेमां ज प्राणने पत्रोयो रे.
काळ महाकाळ त्यां आवी शके नहीं; थई बेठो साव नभोयो रे.
शंकर गाय सदा गुण गुरुदेवना; पाखण्डी पोक मूकी रोयो रे.

卐

(५९) आराम (राग—आखी दुनियानो ठाकोर)

वहाला सद्‌गुरुजीनुं नाम, एमां अमने छे आराम,
वहाला सद्‌गुरुजीनुं धाम, एमां अमने छे आराम.—टेक०
एमां अमने छे आराम—एमां अमने छे आराम०

ज्यारे साचा सद्‌गुरु मळिया, त्यारे संशय सघळा टाळिया
घटमां जोया राम ने श्याम, एमां अमने छे आराम० (१)
साचा सद्‌गुरुना आधारे, पहोच्या देवतणा दरबारे
छूटी गई उपाधि तमाम, एमां अमने छे आराम० (२)
ज्यारे गुरुमूर्ति उर धारी, त्यारे दुनिया लागी खारी
सहेजे सरियां सघळां काम, एमां अमने छे आराम० (३)
सद्‌गुरु नामतणा ज प्रभावे, शंकर अमृतवाणी गावे
दर्शन थाये आठो जाम, एमां अमने आराम० (४)

卐

(६०) (राग :—मोरली कामणगारी)

आंखडी कामणगारी,
बाबा त्हारी आंखडी कामणगारी;
हैयांने वींधी नाखनारी, बाबा
त्हारी आंखडी कामणगारी—टेक०

ए रे आंखडिये जादू भर्यां छे;
मोह्यी रह्यां छे नर नारी—बाबा० (१)

नानी कीकीमां मोटां ब्रह्मांड छे;
भपके छे तेज महा भारी—बाबा० (२)

काळ महाकाळ त्हारां चरणोने चूमतो;
दुनिया ते कोण बिचारी ?—बाबा० (३)

शंकर कहे में जोयुं चौदे भुवनमां;
त्हारी ज छे बलिहारी—बाबा० (४)

卐

(६१)

घणणेण वागी घंटडी, गुरुजीने दरबार;
शंकर ! हालो त्यां जई, करीए ब्रह्मविचार,

घणणण घंटडी वागी रे, हालो गुरुजीना दरबारे;
झळहळ ज्योति जागी रे, वरसे अमृत मुशळधारे—टेक०

गुरुदर्शनथी दुःखडां भागे, ऊपजे आनंद भारे;
थाक्यां-पाक्यां सर्व जीवोने, पळमां पार उतारे० (१)

प्राण समर्पी पियुने परखो, खेलो दशमें द्वारे;
सद्गुरुनी शीतळ छायामां, शोक रहे न लगारे० (२)

गुरुमूर्ति हैयामां राखी, जे जीवे संसारे;
तेनो बेडो पार जगतमां, अनेकने ओधारे० (३)

सद्गुरुदेव दयाना सागर, सघळा दोष निवारे;
शंकर हुं ने म्हारूं मेली, मीठां गीत ललकारे० (४)

卐

(६२) मे जागु रे तु सोजा—(ए राग)

बाबा हाथ पकड ले मारो मोहे तेरो एक सहारो—टेक

आयो तोरे दरबारे बिनति करत बारे बारे
भक्तोके तारणहारे रखलो चरणो मोजारे
बाबा इतनी अरज स्वीकारो—मोहे० (१)

मात तात सुत ओर नारी मतळबकी करते यारी
पिछान ली हे प्रीत सारी आया अब शरण तुमारी
दीननाथ ना करना अकारी—मोहे० (२)

तुमरे हाथ मेरी दोरी दीलमें दया लाना मोरी
अपरंपार लीला तोरी, पहोंच शके न गति मोरी
बाबा गावुं क्या महिमा तुमारो—मोहे० (३)

तपसी बावा ब्रह्मचारी भक्तनके तुम हीतकारी
कहत जयकीशन पुकारी सुनलो अरज दया दील धारी
बाबा भवजल पार उतारो—मोहे० (४)

卐

(६३) हरीने भजता हजु रे—(ए राग)

गुरु पूर्णीमाके दीन आज दर्शन करने आया रे
कीरपा करके गुरु महाराज हमको बुलाया रे—टेक

बडे भाग्य हमारे आज तुमारा दर्शन हुये रे
शीर झुकाता चरणोमांज सब दुःख भुल गये रे (१)

हील मीलके आया हमे बाल बाबा तम पासे रे
दर्शन करके हुवा बहोत न्याल पुरण हुई आसे रे (२)

धन्य धन्य है आजके दिन आनंद आनंद थाता रे
धन्य धन्य हमारे जीवन गुरु गुण गवाता रे (३)

बाबा तेराही चरणो माय बालक हम आया रे
भेट देने लाया नव काई तो भी तुमको भाया रे (४)

मेरे सद्गुरु दीन दयाग हीरदे सदा रहेना रे
कभी बिसरे जयकीशन बाल तो फीर याद देना रे (५)

卐

(६४) तारुं... राम राम—(ए राग)

आज आनंद आनंद थाता है, प्रेमसे गुरुदेव पुजाता है—टेक.
आज गुरु पूर्णिमा कहावत है गुरु पुंजनेको बहोत लोग आवत है (१)
गुरुद्वारे बहोत मेदनी जमावत है, देख सद्गुरुके मन भावत है (२)
यथा शक्ति भेटी सब लावत है, भेट देकर मनमें मुस्कावत है (३)
पूजन करके सब शीर झुकावत है, गुण गाके गुरुको रीझावत है (४)
जय कीशन गुण गाके गवडावत है, आठो पहोर आनंद मनावत है (५)

卐

(६५) वहाला सीताजीना श्याम—(ए राग)

तपसी पुरण भगवान् दयाळु दया निधान, हम बालक अज्ञान.
आके खडा तेरे द्वारपे. हो बाबा—(टक)

हम दरशन करनेको आया, कृपा करके ही तुमने बुलाया;
बुलाया तुमारे स्थान, ऐसे आप हो महान् कैसे धरूं तेरा ध्यान. (१)

तुम सद्गुरु देव हमारे, हम दास के दास तुमारे;
दास तुमारे नादान, हमको नाहि कछु ज्ञान बाबा बतादोने सान. (२)

हम दरशन बीन था दु:खमें, अब दरशन करके हुआ सुखमें;
हुआ सुखमें भगवान् कृपाळु कृपा निधान, गाता प्रेमसे गुणगान. (३)

बाबा प्रेमसे गुण तेरा गाता, सारी संगतको भी गवाता;
गवाता हो के गुलतान् जेजे पुरण भगवान्, कहेते जयकीशन मस्तान्. (४)

卐

(६६) मन डोले मेरा तन डोले—(ए राग)

योगी यति, मेरे प्राण पति
तेरी लीला अपरंपार रे-जय का[illegible] [illegible]नी वाला—टेक

पहेल्लादपुर मुलतान शहेरमे तुमने जन्म धराया
पुरण बाबा नाम तुमारा जगमें जाहिर कराया
सोहे अति तुमरी मुर्ति. तेरी—(१)

बाबा पंजाबदासको गुरु करके अपना शीर झुकाया
उदासीनका बाना लेकर आगे कदम बढाया
घुमे अति कीये प्रगति. तेरी—(२)

हरनिस तप करते बालीपे पद्मासनको वाली
शीरपे हे बाबरीया तनपे भस्म और कफनी काली
धुनी जलती सनमुख अति. तेरी—(३)

घुम घुम सारे भारतमे, उदासी डंका बजावा
भारतके नरनारीओको सोहं जाप जपाया
काटे कुमति देते सुमति. तेरी—(४)
लीला तुमारी बहोत न्यारी, कहेता पार न आवे
गाता रुषी मुनीओ हारे जयकिशन क्या गावे
अल्प मति मेरी कोन गति. तेरी—(५)

卐

(६७) आजे आनंद मनावुं (ए राग)

परदेशी पंछी तुम आना, बाबाके गुण गाना—टेक
आये उनको संग लाना, बाबाके गुण गाना—टेक
नव मास गर्भमें जतन कीया है, इसका नाम जपना ओर जपाना-(१)
नवतन दीया तुने नामको जपने, येही नामकी धुन मचाना-(२)
बाबाके नामसे भवजल तरना, खोटा बखत ना बिताना-(३)
कहत 'जयकिशन' बाबा चरणमें, लहावा अणमुल ले जाना-(४)

卐

(६८) तेरा ... हे चमेली (ए राग)

वरली वाले बाबा आना, तेरा दर्शन तो दीखलाना,
हम आकर खड़ा है तेरे द्वार पे—टेक
दर्शन देकर मुख मलकाना मेरे हीरदेको हरखाना,
हम आकर खड़ा है तेरे द्वार पे—टेक
बहोत समय बीत गया है, अब तुम आज ही आया हाथमें,
प्रेमसे गोविंदके गुण गा लो, बाबा आपण साथमें ।
आजा, आजा, आजा पुरण भगवान,
दर्शन करने दौडके आया, बालकपे दया लाना...(१)

मैं समजा ये वरली वाले, बाबा बहोत भोले ।
इस लिये मैं नाता जोडके, बाबाके संग डोले ॥
आजा, आजा, आजा पुरण भगवान,
'जयकिशन' तेरे द्वार पे आया, अब तो ना तडपाना...(२)

卐

(६९) आवो रे अंबे माता (ए राग)

आजा रे पुरण बाबा, दर्शन देना, इतनी विनंती तुम सुन लेना रे—(१)
दर्शनके लिये हम द्वार पे आया, कीरपा कर चरणोंमें रख लेना रे—(२)
हम तेरा सेवक है और तुम हमरे गुरुदेव, ज्ञानके दुध पीला ही देना रे—(३)
तुमी मेरे बाबाजी और हम तुम्हारे बाळ है,
बाळककी अरजतुम मान लेना रे—(४)
तुमेरी हमेरी बाबा प्रीत है पुराणी,
ये दास 'जयकिशको पहेचान देना रे—(५)

卐

(७०) आवो आवो अंबा अलबेली रे (ए राग)

आजा, आजा पुरण बाबा आजा रे,
दया करके तुम दर्श दीखा जा रे—टेक
वरली नाकापे निकट समुन्दर है, वहाँके मंदर तेरा बहोत सुन्दर है—१
तेरी मूर्तिका तेज बहोत सोहे, देखके सब भक्तनका मन मोहे—२
आये गुरु पुनमको रैना रे, रातभर जागे मेरी नैना रे—३
बाबा गोविन्दके जाप जपाता है, दास 'जयकिशन'के मन भाता है—४

卐

(७१) जागजे जागजे जीवडा—(ए राग)

आनन्द आनन्द बाबा तेरे धाममें हे, बम्बई वरली नाकापे मुकाम—टेक
तेरा मन्दर गगनमें गाजते हे, रचना दीसे दोर दमाम ॥१॥
सोहे सोना शिखर मंदरपे हे, दीसे मीनाकारी बहोत काम ॥२॥
भक्तो आता हे दर्शनके लिये रे, दर्शन करके होवे आराम ॥३॥
सुबह सांम हुवे तेरी आरती रे, उस बक्त होते हे धुम धाम ॥४॥
'जयकिशन' आया तेरे द्वारपे रे, प्रेमसे जपता तेरा नाम ॥५॥

卐

ॐ जय श्रीचंद्रयति

ॐ जय श्रीचंद्रयति (स्वामी) जय श्रीचन्द्रयति
अजर अमर अविनाशी (२) योगी योगपति ॐ जय

संतन पथ प्रदर्शक भक्तन सुखदाता (स्वामी)
अगम निगम प्रचारक (२) कलिमही भवत्राता ॐ जय

कर्ण कुंडल कस्तुंबा: गल सेली साजे (स्वामी)
कामलियाके साहिब (२) चौदिशके राजे ॐ जय

अचल अडोळ समाधि, प[illegible] सोहे (स्वामी)
बालयति वनवासी (२) देखत जग मोहे ॐ जय

कटि कौपीन तनु भस्मी. जटा मुकुटधारी (स्वामी)
धर्म हेत जत प्रगटे (२) शंकर त्रिपुरारी ॐ जय

बाल छबी अति सुन्दर, निशदिन मुस्काते (स्वामी)
भृगुटि विशाल सुलोचन (२) निजानंद राते ॐ जय

उदासीन आचार्य करुणा कर देवा (स्वामी)
प्रेमभक्ति वर दीजें (२) और संतन सेवा ॐ जय

मायातीत गुसांई: तपसी निष्कामी (स्वामी)
पुरुषोत्तम परमात्मा (२) तुम हमरे स्वामी ॐ जय

ऋषि मुनि ब्रह्मज्ञानी, गुण गावत तेरे (स्वामी)
तुम शरणांगत रक्षक (२) तुम ठाकुर मेरे ॐ जय
जो जन तुमको ध्यावेः पावे परमगति (स्वामी)
श्रद्धानंदको दीजे (२) भक्ति विमल मति ॐ जय

卐

ॐ जय श्रीचंदबाबा

ॐ जय श्रीचन्दबाबा, (स्वामी) जय श्रीचन्दबाबा
सुर नर मुनिजन ध्यावत (२) संतनके साहिबा ॐ जय
कलियुग घोर अन्धार देखकर, धरियो अवतारा (स्वामी)
शंकर रूप सदाशिव (२) हर अपरंपारा ॐ जय
योगीन्द्र अवधूत सदा तुम, बालक ब्रह्मचारी (स्वामी)
भेष उदासीन चालक (२) महिमा अतिभारी ॐ जय
रामदास गुरु अरजुन, सोढी कुल भूषण (स्वामी)
सेवत चरण तुमारे (२) मिट गये सब दूषण ॐ जय
रिद्धि सिद्धके दाता, भक्तनके त्राता (स्वामी)
रोग सोग सब काटो (२) शरण जो आता ॐ जय
वेदी वंश रखियो जग भीतर, किरपा कर भारी (स्वामी)
धर्मचन्द उपदेशियो (२) जावा बलिहारी ॐ जय
भक्त गिरि सन्यासी, चरणां बिच गिरिओ (स्वामी)
काट दियो भवबन्धन (२) शिष्य अपना करियो ॐ जय
उदासीनोंके मालिक, पालक दुःख घालक (स्वामी)
आचार्य शिरधार्य (२) जगके संचालक ॐ जय
गौरवर्ण तनु भस्मी, कानमें सजे मुद्रा (स्वामी)
बाबरिया सीर बिराजे (२) पेखकर जग उधरा ॐ जय
पद्मासनको बांध, योगका लियो पारो (स्वामी)
ऐसो ध्यान तुमारो (२) मनमें नित्य धारो ॐ जय

जो जन आरती निशदिन, बाबेकी गावे (स्वामी)
बसे वैकुंठ नरनारी (२) सुख यश फल पावे ॐ जय

卐

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे;
भक्तजनोंके संकट, (२) छीनमें दूर करे—ॐ जय
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनसे मनका, स्वामी दुःख बिनसे मनका;
सुख सम्पत्ति घर आवे, (२) कष्ट मिटे तनका—ॐ जय
मातपिता तुम मेरे, शरण पड़ू किसकी, स्वामी शरण पड़ूं किसकी;
तुम बिन और न दूजा, (२) आश करूँ किसकी—ॐ जय
तुम पूरण परमा मा, तुम अन्तरयामी; स्वामी तुम अन्तरयामी;
पारब्रह्म परमेश्वर, (२) तुम सबके स्वामी—ॐ जय
तुम करुणाके सागर, तुम पालन कर्ता; स्वामी तुम पालन कर्ता;
हम सेवक तुम स्वामी, (२) कृपा करो भरता—ॐ जय
तुम हों एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति.
किस विध मिलहूँ दयामय, (२) तुमको मैं कुमती—ॐ जय
दीनबन्धु दुःख हरतां, ठाकुर तुम मेरे; स्वामी ठाकुर तुम मेरे.
अपने हाथ उठावो, अपने शरण लगावो द्वार पडा तेरे—ॐ जय
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा; स्वामी पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ावो; श्रद्धा प्रेम बढावो; संतनकी सेवा—ॐ जय

卐

तुम ठाकुर तुम पैअरदास, जीय पिंड सब तेरी रास;
तुम मातापिता हम बालक तेरे, तुमरी कीरपामें सुख घनेरे,
प्रभु कोई न जाने तुमरा अन्त, ऊँचेसे ऊँचा भगवन्त
प्रभु सकल समग्री तुमरे सूतरधारी, तुमरे होय सों आज्ञाकारी.
प्रभु तुमरी गति मति तुम ही जानी, नानक दास सदा कुरबानी.

卐

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश,
हे पूरण हे सर्वमय दुःख भंजन गुणतास.
हे संगी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक,
हे गोविंद हे गुण निधान जाके सदा विवेक.
हे अपरंपर हरहरे हे भी होवनहार,
हे सन्तोके सदासंगी निराधारो आधार.
हे ठाकुर हम दासरो मैं निर्गुण गुण नहि कोई,
गुरु सन्तन दीजे नामदान, राखो हीये परोय.
गुरु सन्तन दीजे नामदान, राखो हीये परोय

卐

राम राम बोल, सतनाम बोल, वाह गुरु बोल, कभी न डोल,
यहि तेरो काज हय; बन्दा यहि तेरो काज हय—राम राम
तुलसीकी माला लेकर राम गुण गायेंगे, राम गुण गायेंगे
सीताको मनायेंगे, बाबाको मनायेंगे,—यहि तेरो
राम धून लागी, गोपाल धून लागी
राम धून लागी, गोविंद धून लागी
गोपाल धून लागी, गोविंद धून लागी—यहि तेरो काज
दीनबन्धु दीनानाथ मेरी दोरी तेरे हाथ
शरन पडेकी राखो लाज

ॐ सत् करतार.

卐

श्रीचंद्रयति

श्रीचन्द्रो मम सद्गुरुर्विजयने वन्देऽवधूतं यतिं ।
श्रीचद्रेण प्रकाशितः श्रुतिपथस्तस्मै नमो मे सते ॥
श्रीचन्द्रान्न परोऽस्ति कोऽपि यतिराट् नस्यैव दासोऽस्म्यहम् ।
श्रीचन्द्रो ममानसे सुरमतां श्रीचंद्र भोः पाहि माम् ॥ १ ॥

मूर्ध्नि यस्य तनुजटा सुललिता भूत्या तनुभूषिता ।
कौपिनं खलु नागराजसदृशं संराजतेऽधस्तले ।
मुद्रां भद्रपदां दधाति करयोर्बद्ध्वा च पद्मासनं ।
ब्रह्मध्यानधरः सदा विजयते श्रचन्द्रदेवः शिव ॥ २ ॥
भाद्रे भाद्रपदः सिते सिततनूः पक्षे नवम्यां तिथौ ।
वंशे भास्करभूषितेऽखिलगुरुजति —तां भास्करः ॥
औदासीन्यमतं मतं मुनिजनैराविश्चकारादिमं ।
श्रीचन्द्रं प्रणमाम्यहं यतिवरं तं शाश्वतं नंदनम् ॥ ३ ॥
किं ध्यानमूर्तिरचला किमु धर्ममूर्तिः किं ज्ञानमूर्तिरतुला किमु योगमूर्ति
किंवा शशिः शशिमपास्य भुवं समागात् श्रीचंद्रदेशिकमहं शिवमेव मन्ये ॥४॥
औदास्यमार्गः सनकादिगीतो, लुप्तः कलौ मे जगति प्रवर्त्यः
संचिन्त्य चेत्थं भुवि संबभूव, श्रीचन्द्रनामा गुरुरादिदेव ॥५॥
श्रीचंद्रदेवं शिवमद्वितीयम् भस्मावलिप्त शशिशुभ्रवर्णम् ।
पद्मासनस्थं सुखदं यतीन्द्र वाक्कायचित्तैः सततं भजेऽहम् ॥६॥
श्रीचन्द्रदेवोऽपि तमोऽपहो नो निष्किंचनो यः सह मुद्रयापि ।
गौरीवियोगी शिव एव साक्षात् पायादपायाद्धि स योगिवर्यः ॥७॥

卐

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, सर्वं मम देव देव ॥८॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै सदाशिवायेति समर्पयामि ॥९॥

卐

नमोऽस्तु श्रीचंद्राय, बोलो भगवानश्रीचंद्रदेवकी जय,
बोलो बावे श्रीचंद भगवानकी जय, निर्वाण देवकी जय.

卐

हाथ जोड़ विनती करु, चरण नमाऊँ शीश,
क्षमा करो अपराध मम, क्षमाधार जगदीश.

卐

भावार्थ

मेरे सद्गुरु श्रीचन्द्रकी जय हो। मेरा इस अवधूत योगीको नमस्कार है। श्रीचन्द्रने वेद मार्ग प्रकाश किया। ऐसे सत्पुरुषको मेरा नमस्कार है। श्रीचन्द्रसे अधिक कोई बड़ा योगी नहीं है। मैं उनका दास हूँ। श्रीचन्द्रजी महाराज! आप मेरे मन रूपी मान-सरोवरमें रमण कीजिए और मेरी रक्षा कीजिए। (१)

जिसका मस्तिक देह और जटा सुन्दर है और जिसके शरीर भस्मसे शोभायमान है और कमरकी नीचे कोपीन, नागराज जैसे शोभा देती है और हाथोंमें जिसने कल्याणकारी मुद्राएं धारण की है और जो पद्मासनमें ब्रह्मका ध्यान करने है साक्षात् शिवजी जैसे दीख पड़ता ऐसे श्रीचन्द्र देवकी जय हो। (२)

गुरुदेवका भाद्रपदमें प्राकट्य होनेसे सबका कल्याणकारी है। शुक्लपक्षमें जनम लेनेके कारण श्वैतवर्ष है। अर्थात् भाद्रपद मासके शुक्लपक्षके नोमी तिथिपर कल्याणकारी, गोरे रंगवाला संसारका गुरु सूर्यनारायण जैसा शोभायमान सत्पुरुष सूर्यवंशमें उत्पन्न हुआ। जिसने मुनियोंसे मान्य उदासीन पंथका उदय किया, ऐसे अखण्ड आनन्दवाले योगीराज श्रीचन्दको मेरा नमस्कार है। (३)

यह तो क्या अचल ध्यानमूर्ति है, या साक्षात् अनुपम ज्ञानमूर्ति है, या साक्षात् मूर्तिमान योग है? या चन्द्रलोक छोड़के आया साक्षात् चन्द्र है। परन्तु मैं श्रीचन्द्रकों साक्षात् शिव मानता हूँ। (४)

सनकादि मुनियों जिन्होंने उदासीन मार्गका उपदेश और प्रचार किया था जो कलियुगमें लुप्त हो गये है इसी विचारसे आदि गुरुदेव खुद श्री नारायण श्रीचन्द्रका नामसे प्रकट हुवे। (५)

भस्मसे विभूषित चन्द्रमा जैसा श्वैत वर्णवाले, सुखकारी पद्मासनपर बिराजमान और अद्वैत रूप शिवजी जैसे श्रीचन्द्र देवकों मैं हमेशा वाणी, शरीर और चित्तसे स्मरण करता हूँ। (६)

वह चन्द्रमा है लेकिन केवल अंधकार दूर करनेवाला नहीं बल्कि अज्ञानरूप अन्धकार दूर करनेवाला है उनके कानोंमें सुवर्णकी मुद्रा नहीं लेकिन योगमुद्रा है, वह माया रहित दूसरेकी सहायता विना स्वयं सर्व शक्तिमान, साक्षात् शिवजी है, ऐसा योगीराज हमारी रक्षा करे। (७)

हे देव! तू माता है, पिता है, बंधु है! मित्र है, विद्या है, धन है अर्थात् सब कुछ तू है! (८)

शरीर, वाणी, मन, इद्रियों बुद्धि प्रकृति और स्वभाव अनुसार मैं जो कुछ करता हूँ वह सब कुछ श्री सदाशिवको अर्पण करता हूँ॥ (९)

卐

ग्यान घ्यान कुच कर्म न जाना, बाबा सार न जाना तेरी।
सबसे बड़ा सत्‌गुरु नानक, जिन कल राखी मेरी॥
बाबा अपने सेवककी आपे राखे, आपे नाम जपावे।
जहां जहां काज पड़त सेवकके, तहां तहां उठ धावे॥

卐

शयन आरती

अब प्रभू करन लागे शयन, चांदनी घनँघेरी आई बहुत बीति रेन–अब प्रभू...
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, जानकी सुख दैंन–अब प्रभू...
मधुबलिके प्राणजीवन, ये दो राजीव नयन–अब प्रभू...

卐

लोली पियारा लोली, गुरु नानक शाह खे लोली...
नानक नन्दशे पींगनमें, जंहिखे लोढ़े द्यो सम लोली...
सोना हिंदोरा पट्ट पटी, और लरकन लाल अमोली...
दुहिल दमाना खंजरूं खूरकन, गायन राग अमोली...

बांहुं बघी अजु दान मंगाथी, दीन दुनिया जा वाली...
कोन बंजे थो दर तुंहिजे तो, नर ऐ नारी खाली...
दासना दासु अरदास करे थों, प्रभू कन्दे सभनिजी सवलीं...
लोली पियारा लोली, गुरु नानक शाह खे लोली...

卐

पिता तुम परविघ्न हो, हम अवगुनकी खाण ।
दया चित्तमें राख लियो, बालक अपना जान ॥
प्रभु जितने समुदर, सागर नीर भर्या, ते ते अवगुण हमारे ।
दया करो कुछ महेर उपावो, डूबते पथ्थर तारे राम ॥

卐

त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्व मम देव देव ॥

सीताराम भजो, राधेश्याम भजो मन मेरे ।
कट जायेंगे संकट तेरे, कट जायेंगे संकट मेरे ॥

बोलों गुरु नानक देवकी जय
सियावर रामचन्द्रकी जय
राधावर कृष्णलालकी जय
उमापति महादेवकी जय
पवनसुत हनुमानकी जय
बोलों भाई सब संतनकी जय
बोलो बाबे श्रीचन्द भगवानकी जय बोलो गुरुदेवकी जय
बोलो मातपिताकी जय
बोलो गौ-ब्राह्मणकी जय
बोलो गंगा-जमुना मैयाकी जय
बोलो सारी संगतकी जय
बोलो आजके आनन्दकी जय
बोलो सनातन धर्मकी जय
बोलो कारीगर भगवानकी जय
बोलो कृष्ण बळदेवकी जय
बोलो निर्वाण देवकी जय
बोलो गोदावरी माताकी जय

बोलो विराट भगवानकी जय

गम लीये मुश्कील (ए राग)

जे जे पूरण भगावन मैं बालक हूँ नादान नजर करजो;

आया आया मैं तेरे मंदर जो—टेक

किजे सहाय सदैव हमारी, बाबा आया मैं शरण तुमारी ।

शरणे रखलो मुझे. नमुं चरण तुझे; मन भर जो—आया० (१)

नहि आप बिना कोई मेरा, मुझे एक ही आशरा तेरा ।

दास मुझको पहिचान, दीजे भक्तिका दान; दीलावर जो—आया० (२)

सब भक्तनके रखवाला, सुणो सद्गुरु दीन दयाला ।

गुण गाता तेरा आया, विघन मेरा दूर कर जो—आया० (३)

लाज रखना बाबा बलवंता, ब्रह्मचारी पूरण भगवंता ।

बल बुद्धि दो साहिबा, तपसी पूरण बाबा, तपेश्वर जो—आया० (४)

दास विनती करत शीश नामी बाबा आप हो अंतरयामी ।

सर्वज्ञ हो तुमें बाबा, क्या कहूँमें, योगेश्वर जो—आया० (५)

मूढ मति मैं बाल तिहारा, बाबा मुझको है तेरा सहारा ।

कायम रख लो शरण, टालो जन्म मरण परमेश्वर जो—आया० (६)

मनोरथ मेरा पूरण करना, मेरी इतनी अरज उर धरना ।

सुखदाता है तुम, इसलिये कहते हम, जोडी कर जो आया० (७)

रटण करता मैं नाम तुमारा, बेडा पार ही कर दो हमारा ।

तपसी बाबा पूरण, कहे दास 'जयकिशन' शीश धरजो—आया० (८)

श्री रामस्तुति

—✦✦—

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरन भवभय दारुणं ।
नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणम् ॥
कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील निरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तडित रुचिशुचि नौमी जनक सुतावरम् ॥
शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं ।
आजानभुज शरचापधर संग्रामजित खरदूषणं ॥
भज दीनबंधु दिनेश दानवदलन दुष्ट[illegible]कन्दनम् ।
रघुनन्द [illegible]नन्दकन्द कौशलचन्द दशरथनन्दम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रंजनम् ।
मम हृदयकुंजे निवास कुरु कामादि खलदलगंजनम् ॥

प्रकाशक :
नारणदास मोरारभाई भजीवाला,
नवापुरा, राणावोर्ड, लीमडी शेरी,
सूरत.

मुद्रक :
चंदुलाल तुलसीदास राणा
'महेश प्रिन्टरी,'
इन्दरपुरा, 'बदरीरोड, सूरत.